Serving Education for Last 40 Years

NEEJAJ®

M.R.D.E. -004

उद्यमशीलता एवं ग्राम विकास

(Entrepreneurship and Rural Development)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Narad Rai Sharma*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 320/-

Content

उद्यमशीलता एवं ग्राम विकास

(Entrepreneurship and Rural Development)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

उद्यमशीलता को समझना
(Understanding Entrepreneurship)

1. उद्यमशीलता : संकल्पना एवं सिद्धान्त 1
(Entrepreneurship: Concept and Theories)

2. भारत में उद्यमशीलता का उद्‌भव 14
(Evolution of Entrepreneurship in India)

3. लोकतांत्रिक राज्य, विकास एवं उद्यमशीलता 24
(Democratic State, Development and Entrepreneurship)

4. बाजार अर्थव्यवस्था एवं उद्यमशीलता 36
(Market Economy and Entrepreneurship)

5. ग्रामीण उद्यमशीलता को उन्मुक्त करना 51
(Unleashing Rural Entrepreneurship)

ग्रामीण उद्यमशीलता : कार्यनीतियां एवं अनुभव
(Rural Entrepreneurship: Strategies and Experiences)

6. उद्यमशीलता : नीतियां एवं कार्यनीतियां 63
(Entrepreneurship: Policies and Strategies)

7. ग्रामीण उद्यमशीलता के प्रकार 76
(Types of Rural Entrepreneurship)

8. ग्रामीण उद्यमशीलता–सफल अनुभव 87
(Rural Entrepreneurship–Successful Experiences)

9. ग्रामीण उद्यमशीलता–अंतर्राष्ट्रीय अनुभव 106
(Rural Entrepreneurship–International Experiences)

10. ग्रामीण उद्यमशीलता के प्रमुख क्षेत्र 117
(Domains of Rural Entrepreneurship)

ग्रामीण क्षेत्र में उद्यम की स्थापना
(Establishment of Enterprises in Rural Areas)

11. ग्राम उद्यम की योजना बनाना 127
(Planning a Rural Entreprise)

12. मानव संसाधन एवं आधारभूत ढांचा 135
(Human Resources and Infrastructure)

13. वित्तीय व्यवस्था एवं प्रबंधन 147
(Arranging and Managing Finance)

14. ग्रामीण उद्यम का प्रबंधन 158
(Managing a Rural Enterprise)

15. ग्रामीण उत्पादों एवं सेवाओं का विपणन 171
(Marketing Rural Products and Services)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

उद्यमशीलता एवं ग्राम विकास

M.R.D.E.-004

(Entrepreneurship and Rural Development)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) सभी* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। (ii) सभी प्रश्नों के* ***अंक समान*** *हैं।*

प्रश्न 1. साझेदारी से आपका क्या समझते हैं? इसके फायदे और नुकसान पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-76, 'साझेदारी', पृष्ठ-77, 'साझेदारी के लाभ', पृष्ठ-78, 'साझेदारी के दोष', पृष्ठ-81, प्रश्न 4

अथवा

ग्रामीण उद्यमों के विकास के लिए मानव संसाधन की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-135, 'ग्रामीण उद्यमों को विकसित करने हेतु मानव संसाधन', पृष्ठ-14, प्रश्न 4

प्रश्न 2. उद्यमशीलता से आप क्या समझते हैं? इसकी प्रकृति और विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'परिचय', 'उद्यमी की संकल्पना', पृष्ठ-4, 'उद्यमशीलता की प्रकृति एवं विशेषताएँ'

अथवा

ग्रामीण उद्यम के लिए सेवा क्षेत्र कितना महत्त्वपूर्ण है? भारत में ग्रामीण पर्यटन की क्षमता के बारे में बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-119, 'सेवा क्षेत्र ग्राम उद्यम', पृष्ठ-120, 'ग्राम पर्यटन'

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) ग्रामीण उद्यमी के लिए धन के विभिन्न क्या स्रोत उपलब्ध हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-147, 'निधियों के स्रोत'

(ख) लोकतांत्रिक राज्य उद्यमिता के लिए अधिक अनुकूल क्यों है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-25, 'लोकतांत्रिक राज्य एवं नवाचार', अध्याय-1, पृष्ठ-5, 'उद्यमशीलता, नवाचार एवं अनुकूलन'

(ग) भारत में ग्रामीण पर्यटन के क्षेत्र की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-125, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) समूह उद्यमिता के प्रमुख प्रकार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-76, 'समूह उद्यमशीलता'

(ख) बांगलादेश में ग्रामीण बैंक

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-107, 'ग्रामीण बैंक बांग्लादेश'

(ग) सहकारी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-79, 'सहकारी समितियाँ', पृष्ठ-82, प्रश्न 6

(घ) बाजार अर्थव्यवस्था की विशेषताएं

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-45, प्रश्न 3

(ङ) उद्यमिता में स्थानीय विकास संस्थानों की भूमिका

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-25, 'स्थानीय विकास संस्थाओं की भूमिका'

(च) आप बाजार का आकलन कैसे करते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-128, 'बाजार मूल्यांकन'

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किन्हीं पांच पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) उद्यमी की मान्यता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'उद्यमी की मान्यता'

(ख) नाबार्ड

उत्तर–शिवरामन समिति (शिवरामन कमिटी) की सिफारिशों के आधार पर राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक अधिनियम 1981 को लागू करने के लिए संसद के एक अधिनियम के द्वारा 12 जुलाई 1982 को नाबार्ड की स्थापना की गयी। इसने कृषि ऋण विभाग (एसीडी (ACD) एवं भारतीय रिजर्व बैंक के ग्रामीण योजना और ऋण प्रकोष्ठ (रुरल प्लानिंग एंड क्रेडिट सेल) (RPCC)

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

तथा कृषि पुनर्वित्त और विकास निगम (ARDC) को प्रतिस्थापित कर अपनी जगह बनाई। यह ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण उपलब्ध कराने के लिए प्रमुख एजेंसियों में से एक है।

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक एक ऐसा बैंक है, जो ग्रामीणों को उनके विकास एवं आर्थिक रूप से उनकी जीवन स्तर सुधारने के लिए ऋण उपलब्ध कराता है।

कृषि, लघु उद्योग, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग, हस्तशिल्प और अन्य ग्रामीण शिल्पों के उन्नयन और विकास के लिए ऋण-प्रवाह सुविधाजनक बनाने के अधिदेश के साथ नाबार्ड 12 जुलाई 1982 को एक शीर्ष विकासात्मक बैंक के रूप में स्थापित किया गया था। उसे ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य संबंधित क्रियाकलापों को सहायता प्रदान करने, एकीकृत और सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने और ग्रामीण क्षेत्रों में समृद्धि सुनिश्चित करने का भी अधिदेश प्राप्त है।

ग्रामीण समृद्धि के फैसिलिटेटर के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करने के लिए नाबार्ड को निम्नलिखित जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं–

1. ग्रामीण क्षेत्रों में ऋणदाता संस्थाओं को पुनर्वित्त उपलब्ध कराना।

2. संस्थागत विकास करना या उसे बढ़ावा देना।

3. क्लाइंट बैंकों का मूल्यांकन, निगरानी और निरीक्षण करना।

4. ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए, जो संस्थान निवेश और उत्पादन ऋण उपलब्ध कराते हैं। उनके वित्तपोषण की एक शीर्ष एजेंसी के रूप में यह कार्य करता है।

5. ऋण वितरण प्रणाली की अवशोषण क्षमता के लिए संस्थान के निर्माण की दिशा में उपाय करता है, जिसमें निगरानी, पुनर्वास योजनाओं के क्रियान्वयन, ऋण संस्थाओं के पुनर्गठन, कर्मियों के प्रशिक्षण में सुधार, इत्यादि शामिल हैं।

6. सभी संस्थाएं, जो मूलत: जमीनी स्तर पर विकास में लगे काम से जुडी हैं, उनकी ग्रामीण वित्तपोषण की गतिविधियों के साथ समन्वय रखता है, तथा भारत सरकार, राज्य सरकारों, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई (RBI)) एवं नीति निर्धारण के मामलों से जुडी अन्य राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं के साथ तालमेल बनाए रखता है।

7. यह अपनी पुनर्वित्त परियोजनाओं की निगरानी एवं मूल्यांकन का उत्तरदायित्व ग्रहण करता है।

नाबार्ड का पुनर्वित्त राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंकों (SCARDBs), राज्य सहकारी बैंकों ((SCBs), क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (RRBs) बैंकों, वाणिज्यिक बैंकों (CBS) और आरबीआई अनुमोदित अन्य वित्तीय संस्थानों के लिए उपलब्ध है, जबकि निवेश ऋण का अंतिम लाभार्थियों में व्यक्तियों, साझेदारी से संबंधित संस्थानों, कंपनियों, राज्य के स्वामित्व वाले निगमों, या सहकारी समितियों को शामिल किया जा सकता है, जबकि आम तौर पर उत्पादन ऋण व्यक्तियों को ही दिया जाता है। नाबार्ड का अपना मुख्य कार्यालय मुंबई, भारत में है।

(ग) ग्रामीण रोजगार पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-27, 'ग्रामीण रोजगार पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव'

(घ) ग्रामीण-शहरी विरोधाभास

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-5, 'ग्रामीण-शहरी द्विभाजन'

(ङ) ग्राम और लघु उद्योग

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-68, 'ग्राम एवं लघु उद्योगों का विहंगावलोकन'

(च) कम्पनी के लाभ

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-78, 'कंपनी के लाभ'

(छ) परम्परागत अर्थव्यवस्था

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-43, प्रश्न 2 (पारंपरिक अर्थव्यवस्था)'

(ज) रोकड़ प्रवाह प्रबंध

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-161, 'नकदी प्रवाह प्रबंधन'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

उद्यमशीलता एवं ग्राम विकास
(Entrepreneurship and Rural Development)

उद्यमशीलता को समझना
(Understanding Entrepreneurship)

उद्यमशीलता : संकल्पना एवं सिद्धान्त
(Entrepreneurship: Concept and Theories)

1

परिचय

उद्यम एक विशेष प्रयास है और उद्यम शुरू करने एवं इसकी देखरेख करने की प्रक्रिया उद्यमशीलता है। उद्यम की संकल्पना का ज्ञान अब तक उसके रूपान्तरित स्थिति से हो सकता है। मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दशाओं के आधार पर ही उद्यमशीलता के सिद्धान्तों पर चर्चा की जा सकती है, क्योंकि ये उसके विकास में सहायक हैं। कुछ विशिष्ट सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होकर उद्यमी का जन्म होता है। ये कारक उसकी मनोवैज्ञानिक सोच में वृद्धि करते हैं। एक उद्यमी सर्वश्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करना चाहता है और इसके लिए भारी जोखिम भी उठाने के लिए तैयार रहता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

उद्यमी (Entrepreneur) की संकल्पना

'उद्यमी' शब्द की व्युत्पत्ति

उद्यमी को अंग्रेजी में 'आंत्रेप्रन्योर' कहते हैं। इसका प्रयोग फ्रांसीसी भाषा में व्यावहारिक अवधारणा के रूप में किया जाता था। 16वीं शताब्दी में इस शब्द का प्रयोग सैनिक अभियानों के लिए किया जाता था जबकि 17वीं शताब्दी में किलेबंदी करने वालों के लिए प्रयुक्त होता था। 18वीं शताब्दी में इसका प्रयोग आर्थिक गतिविधियों के लिए होने लगा। इसी सदी में रिचर्ड कैंटीलान ने उन लोगों को उद्यमी कहा, जो अपने उत्पाद अनिश्चित मूल्य पर बेचते हैं और निश्चित दाम पर सेवाओं को खरीदते हैं। यह एक प्रकार से स्वामी और उद्यमी के मध्य अन्तर स्पष्ट करता है। उन्होंने वस्तुओं के उत्पादन एवं विनिमय की प्रक्रिया में सम्मिलित जोखिम पर बल दिया।

कुछ समय पश्चात जील बैपटाइस ने उद्यमी और पूँजीपतियों के बीच अंतर स्पष्ट किया। उन्होंने उद्यमशीलता को जोखिम उठाने के रूप में प्रयोग किया। वे उद्यमी को उत्पादन का सबसे बड़ा अभिकर्त्ता उद्यमी को मनाते थे। उसके अनुसार उद्यमी में महा–अधीक्षण एवं अच्छे प्रशासक के गुण होने चाहिए।

उद्यमी की गैर–मान्यता प्राप्त स्थिति

अंग्रेज अर्थशास्त्रियों ने उद्यमशीलता की विचारधारा पर कोई विशेष बल नहीं दिया। एडम स्मिथ का कहना था–''पूंजीपति का उद्देश्य अपनी पूँजी को बढ़ाना होता है। वे मुनाफा और ब्याज में कोई अंतर नहीं मानते।'' बचत को निवेश के रूप में देखा गया। उन्होंने किसी भी व्यवसाय में शामिल जोखिम उठाना और समन्वय जैसे कारकों के विश्लेषण पर विशेष ध्यान नहीं दिया। उन्होंने तीन व्यवस्थाओं का वर्णन किया है–जो किराये से जीवन बिताते हैं, जो मजदूरी से जीवन-निर्वाह करते हैं और जो मुनाफे से जीवन-निर्वाह करते हैं।

रिकार्डो ने आर्थिक विकास के सिद्धान्त में पूँजी संग्रहण की दर को महत्त्व दिया। उसके अनुसार पूँजी संग्रह दर को प्रमुख कारक प्रभावित करते हैं–बचत करने की योग्यता और बचत करने की इच्छा शक्ति। बचत करने की इच्छा शक्ति में मुनाफे की दर भी निर्भर है। मुनाफा और मजदूरी एक-दूसरे पर असर डालते हैं। रिकार्डो का मत स्मिथ से इस दृष्टि से भिन्न था कि विस्तार या घटने के लिये अर्थव्यवस्था पूर्ण रूप से निवेश की दर पर निर्भर नहीं रह सकती। इसको अन्य सामाजिक एवं सांस्कृति कारक प्रभावित करते हैं। एल्फ्रेड मार्शल ने भी स्मिथ-रिकॉर्डियन मत की मान्यता को स्वीकार किया।

मार्शल ने पूँजीपति और प्रबन्धक को एक-दूसरे से अलग बताया। उनके अनुसार जो प्रबंधक व्यवसाय की नई विधियों को अपनाकर अपनी आय बढ़ाते हैं, उन्हें आगे चलकर अन्यों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है और उसका मुनाफा कम हो जाता है। यह नवाचार था, जिसका अनुमान शूमपीटर ने लगाया था।

www.neerajbooks.com

उद्यमी की पहचान

लीओन वालरस (Leon Walras) ने अपने सामान्य संतुलन के सिद्धान्त में उद्यमी के उत्पादन को चौथे कारक के रूप में माना है। अन्य तीन कारक भूमि, श्रम और पूँजी हैं, उद्यमी जिसका समन्वय करता है। उद्यमी सामान्य संतुलन बनाने में बाजार की दिशा सुनिश्चित करने का प्रयत्न करता है। वह लाभ वाले क्षेत्र में जोखिम उठाता है और हानि वाले क्षेत्र को छोड़ देता है और हानि को रोकने का प्रयास करता है। उद्यमशीलता में आधुनिक आर्थिक सिद्धान्त शूमपीटर से पहले चलन में नहीं था, इसीलिए उद्यमशीलता को उत्पादन में मात्र कारक मानने की प्रवृत्तियों के संदर्भ में शूमपीटर के कार्य को पथ प्रदर्शन के रूप में स्वीकार किया गया। उनके अनुसार उद्यमी में नये प्रयोग करने की अद्‌भुत इच्छाशक्ति होती है। किसी भी आर्थिक स्थिति पर उद्यमी की सृजनात्मक प्रतिक्रिया आर्थिक गतिविधियों पर अच्छा प्रभाव डालती है। यह जरूरी नहीं है कि उद्यमी एक अच्छा प्रबन्धक हो। वह नई बातें प्रस्तुत करके आवश्यक परिवर्तन लाता है जिससे व्यवसाय का विस्तार होता है। उद्यमी किसी विशेष वर्ग से संबंधित नहीं होता। उसकी कोई भी आर्थिक पृष्ठभूमि हो सकती है।

शूमपीटर का कहना है कि नवाचार अविष्कार नहीं है, क्योंकि इसका कारण नये उत्पाद की प्रस्तुति या नई प्रौद्योगिकी को अपनाना या नए बाजार का खुलना आदि कारण हो सकते हैं। शूमपीटर का सिद्धान्त औद्योगिक क्रान्ति के समय उसके अनुभवों पर आधारित था। यह सिद्धान्त अल्पविकसित पूँजीवादी देशों के अनुकूल नहीं है।

आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका के रूप में उद्यमी एच.कोल (H.Cole), जी.एच. ईवन्स (G.H. Evens), टी.सी. कोचरन (T.C. Cochran)

ये विचारक शूमपीटर के सिद्धान्त का समर्थन करते हैं। कोल के अनुसार ''उद्यमशीलता किसी व्यक्ति या समूह द्वारा किया गया कार्यों का समेकित क्रम है, जिसका पता व्यावसायिक इकाइयों में पर्याप्त सीमा तक अनिश्चितता से चलता है।'' ईवन्स का कहना है कि व्यवसाय के सन्दर्भ में उद्यमी वह है, जो व्यावसायिक इकाइयों के मामले में पहल कर इन्हें संगठित एवं नियोजित करता है। कोचरन का मानना है कि उद्यमी ऐसा शब्द है जो व्यवहारिकता में किसी व्यक्ति पर लागू किए जाने के बजाय एक आदर्श प्रतिक्रिया को ही दर्शाता है। कोई भी व्यवसाय या अन्य औपचारिक व्यक्ति उद्यमशीलता को लागू कर सकते हैं।

उद्यमी संगठन–फ्रेडरिक हार्बिसन (Frederick Harbison)

फ्रेडरिक हार्बिसन के अनुसार उद्यमी ऐसा संगठन है जिसमें लोग उद्यम सम्बन्धी कार्यों को पूरा करते हैं। जैसे–

(i) जोखिम उठाना और अनिश्चितता से संघर्ष करना,
(ii) नियोजन एवं नवाचार,
(iii) समन्वय, प्रशासन एवं नियंत्रण, और
(iv) नियमित पर्यवेक्षण।

ये सभी कार्य एक लघु उद्यमी व्यक्ति द्वारा किये जा सकते हैं, परन्तु बड़ी इकाइयों में कई व्यक्तियों का पदानुक्रम के अनुसार अधिकार एवं कर्तव्य प्रदान करना आवश्यक है। उद्यम में भाग लेने वाले समूह को संगठन का नाम दिया जाता है। हार्बिसन के अनुसार 'संगठन' शब्द उद्यम के प्रबन्ध में प्रयुक्त कार्यों, व्यक्तियों एवं योग्यताओं का एक समेकित रूप बन जाता है। यही 'संगठन में निवेश' भी बन जाता है। संगठन की इस संकल्पना का प्रयोग बड़े संयुक्त स्टॉक कंपनियों के संदर्भ में उपयोगी होता है।

मॉरिस डोब (Maurice Dobb) ने भी उद्यमी की भूमिका को स्वीकार किया है। उनका कहना है कि उद्यमी प्रकार्य समन्वय नियंत्रण या समेकित है जो किसी भी समाज के लिए आवश्यक है।

सूक्ष्म आर्थिक (Micro-Economics) मॉडलों पर जोर– विलियम जे. बोमल एवं हार्वे लेबेन्सिटिन

विलियम जे. बोमल समस्याओं के समाधान के लिए सूक्ष्म आर्थिक मॉडल को शक्तिशाली साधन मानते हैं। इससे उद्यमी आर्थिक दूरदर्शी व्यक्ति की जरूरत नहीं है। हार्वे लेबेन्सिटिन के अनुसार निश्चितता के लिए स्थिर मॉडल जरूरी है। उनके अनुसार, ''उत्पादन कार्य–आगत–निर्गत निश्चित जोड़ना है। ऐसे गतिविधि के मुनाफे का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, जो आगत को निर्गत में बदलती है।''

लेबेन्सिटिन के अनुसार उद्यमी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह में चार विशेषताएं होनी चाहिए–

(i) दूरी भरना,
(ii) बाजारों को जोड़ना,
(iii) आगत पूर्तिकरण (Input Completing),
(iv) बाजार सृजन एवं विस्तार आगत पूर्तिकरण से उनका अर्थ किसी आर्थिक गतिविधि के लिए आगतों की निश्चित परिमात्रा को क्रमबद्ध करने की आवश्यकता पड़ती है। यदि यह बहुत कम है, तो उद्यमी द्वारा इसे पूरा करना पड़ता है। उद्यमियों की आवश्यकता पूरी करने वाले एवं साधनों को जुटाने वालों के लिए उपलब्ध अवसरों पर निर्भर करता है। ये कार्य पर्यावरण में विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक एवं अभिप्रेरणात्मक कारक से प्रभावित हो सकते हैं या बाधक हो सकते हैं।

उद्यमियों को निष्क्रिय मानना : एच.जे. हब्बाकुक (H.J. Habakkuk) फिल्लिस डेनी (Phyllis Deane) एवं डगलस नार्थ (Douglas North)

इन तीनों विचारकों का कहना है कि विभिन्न कारकों के कारण उद्यमी की भूमिका अब सक्रिय नहीं है। ये कारक–अविष्कार परिवर्तित, नव बाजार अवसर आदि हैं। किल्बी इनके तथ्यों को स्वीकार नहीं करता और कहता है कि उद्यमी अनेक कार्यों में

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अपनी भूमिका का निर्वहन करता है। उद्यमी ही फर्म के बाहरी विकास एवं आंतरिक प्रबन्धन, दुर्लभ संसाधनों पर नियंत्रण, आर्थिक अवसरों, तकनीकी एवं संगठात्मक नवाचारों का उपयोग करता है। विभिन्न परिवेश के नवीन एवं अलग प्रकार के कार्यों को करने की उसकी विवशता होती है।

उद्यमशीलता (Entrepreneurship) पर आधारित सिद्धान्त

उद्यमशीलता पर आधारित सिद्धान्तों का विश्लेषण आवश्यक है, क्योंकि ये सिद्धान्त विभिन्न विचारों पर आधारित हैं।

मैक्स वेबर एवं शूमपीटर

किल्बी पीटर के अनुसार इन दोनों के विचारों में पर्याप्त समानता है एवं वे सरल हैं। इन दोनों के सिद्धान्तों में सामान्य एवं प्रमुख तत्त्व नवाचार हैं। बेबर के उद्यमी के नवाचार में प्रत्येक पहलू का विवेकपूर्ण विश्लेषण दिखाई देता है, जबकि शूमपीटर की नवाचार की धारणा अधिक सर्जनात्मक है। इसके अन्तर्गत उद्यमी साधनों की क्रमबद्ध व्यवस्था करता है।, वह प्रौद्योगिकी में मूलभूत परिवर्तन ला सकता है या नई मांगों की उत्पत्ति, कच्चे माल की आपूर्ति के नये स्रोत का पता या नये संगठनात्मक कौशलों को पैदा कर सकता है। शूमपीटर अन्य विचारकों से इस दृष्टि से भिन्न है। वह सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक चरों को महत्त्व नहीं देता है। इसकी वस्तुओं का देखने की संस्थागत क्षमता सफल है और उसमें सामाजिक विरोध हो सकता है।

डेविड मैकक्लेलैंड

डेविड मैकक्लेलैंड ने अपनी पुस्तक 'अचीविंग सोसाइटी' में अपने से पहले के विचारकों की नवाचार एवं जोखिम उठाने की क्षमता पर आधारित उद्यमशीलता के सिद्धान्त को लोगों के सामने रखा और बताया कि विभिन्न समूह समान स्थितियों में विभिन्न प्रकार से प्रतिक्रिया करते हैं। इस संबंध में उनकी संकल्पना 'नीड फॉर अचीवमेंट' या 'एन एचीवमेंट' की थी। इसके लिए जो लोग उपलब्धि के लिए अधिक प्रयास करते हैं, वे तीव्रगति से अधिक प्रयास करते हैं। उनका कथन था कि 'एन अचीवमेंट' लोगों को उद्यमों से जुड़े कार्यों विशेष रूप से सटीक परिणाम देने वाले ज्ञान का विकास करता है। इस प्रकार उद्यमशीलता एवं एन अचीवमेंट परस्पर सम्बन्धित हैं।

पीटर किल्बी ने कहा है कि डेविड मैकक्लेलैंड ने मैक्स वेबर के उद्यमशीलता व्यवहार के सिद्धान्त का विस्तार किया है। मैकक्लेलैंड का कहना है कि 'एन अचीवमेंट' का विस्तार बचपन के परिवेश से अधिक प्रेरित होता है। बाल पोषण नीतियों से मातृस्नेह, स्वावलम्बन, प्रशिक्षण और अल्प सत्ताशीलता की पुष्टि मिलती है। बाद के कार्यों में इसमें प्रेरणा नहीं मिलती।

रॉबर्ट ले वाईन (Robert Le Vine)

राबर्ट ले वाइन उद्यमियों के प्रेरणा के लिए सामाजिक संरचना को विशेष महत्त्व देते हैं। वे प्रेरक कारक के रूप में प्रचलित मूल्यों को कम महत्त्व देते हैं। समाजीकरण में उच्चस्थिति को प्राप्त व्यक्ति व्यावसायिक भूमिका में अधिक सफल होता है। उसे अपने अभिभावकों से पहल करने, मेहनती होने दूरदर्शी होने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

ई.ई. हेगन (E.E. Hagen)

हेगन पारंपरिक समाज से आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था वाले समाज की ओर बढ़ने के लिए 'सर्जनात्मक व्यक्तित्व' के महत्त्व पर बल देते हैं। वे पारंपरिक समाज को 'गैर-सर्जनात्मक व्यक्तित्व' से जोड़ते हैं। उनके अनुसार सभी समाज पहले पारंपरिक समाज थे। बाल-पोषण की पारंपरिक रीतियों पर आधारित होने के कारण उद्यमशीलता में तेजी से आगे नहीं बढ़ते और इस प्रकार गैर-सर्जनात्मक व्यक्तित्व की वृद्धि होने लगती है। कुछ समाज आधुनिकता में विश्वास करते हैं और उनमें सर्जनात्मक व्यक्तित्व का विकास हो रहा है। वे अपनी ऊर्जा को आर्थिक विकास करने वाली गतिविधियों में लगाते हैं और आर्थिक दृष्टि से सशक्त हो जाते हैं और समाज को भी आधुनिक बनाने में सहयोग देते हैं।

हेगन के अनुसार, प्रस्थिति परावर्तन (Status withdrawal) चार प्रकार की घटनाओं से होता है–

(i) बल द्वारा विस्थापन,
(ii) परम्परा का परित्याग,
(iii) प्रस्थिति संकटों में परिवर्तन,
(iv) प्रत्याशित प्रस्थिति को न मानना।

हेगन की प्रस्थिति परिवर्तन से मैकक्लेलैंड सहमत नहीं हैं, यद्यपि दोनों उद्यमशीलता के स्रोत के रूप में सर्जनात्मक व्यक्तित्व को स्वीकार करते हैं।

थॉमस सी. कोचरन

कोचरन के अनुसार उद्यमशीलता आदर्श प्रकार के व्यक्तित्व को व्यक्त करती है, जिसकी उत्पत्ति समाज में विद्यमान सांस्कृतिक मूल्यों, भूमिका प्रत्याशाओं एवं सामाजिक स्वीकृति होती है। व्यक्तित्व के उच्च मूल्य वाले पोषण की रीतियों के माध्यम से प्रशिक्षित किया जाता है। यह व्यक्तित्व परिचालन आवश्यकताओं और समूहों की भूमिका पर निर्भर करती है।

फ्रैंक डब्ल्यू यंग (Frank W. Young)

यंग के सिद्धान्त की प्रकृति समाजशास्त्रीय अधिक है और सैद्धांतिक परिकल्पना के समान है। वे उद्यमशीलता के इतिहास के अध्ययन में प्रसिद्ध व्यवसायियों एवं बड़े उद्योगपतियों को महत्त्व देते हैं, परन्तु वे उद्यमशीलता को मौलिक रूप से समूह स्तर की परिघटना मानते हैं। उनके अनुसार, ''जब कोई समूह या उपसमूह पर्याप्त सीमा तक असमान एवं निम्न स्थिति में होता है, तो स्थिति पर प्रक्रिया करने के लिए एकजुट होने की ओर बढ़ते हैं। समूह, ऐसी एकता उसके पुरजोर यत्नों से दिखाई देती है। जहां उसका उद्देश्य सांकेतिक स्थिति बेहतर बनाना है।'' विस्तृत संरचना में अपनी सांकेतिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए व्यावसायिक एवं पारिवारिक स्थिति में भिन्नता के बावजूद भी वे अपनी समझ

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समन्वय स्थापित करने के लिए तरीके एवं साधन सदैव ढूंढते हैं। अपनी स्थिति को बेहतर बनाने के लिए जब वे आर्थिक क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तो इससे उद्यमता संबंधी क्रिया अपने पारंपरिक अंदाज में तेजी से आगे बढ़ने लगती है। यंग का कहना है कि सामूहिक एकता की संकल्पना उद्यमशीलता का स्थान ले सकती है और इसे राष्ट्रीय स्तर तक विस्तृत या एक व्यक्ति तक सीमित किया जाता है।

यंग के विचार उद्यमशीलता के सम्बन्ध में नवप्रवर्तक जैसे ही हैं। उद्यमशीलता का वैयक्तिक स्तर वस्तुतः उद्यमशीलता के समूह स्तर की आंशिक अभिव्यक्ति है। यद्यपि कोई उद्यमी अकेले ही सारे काम करता है, परन्तु वास्तव में वह सभी कार्य समूह के सहयोग से करता है। उद्यमशीलता संबंधी गतिविधियां करने के लिए विशिष्ट समूह के अनुभव, पारिवारिक पृष्ठभूमि एवं सामान्य सांस्कृतिक मूल्यों का प्रभाव संयुक्त रूप से उत्तरदायी है। इस प्रकार इस विश्लेषण से मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियायें समाजशास्त्र का ही अंग हैं।

जॉन एच. कुंकल (J.H. Kunkel)

जॉन एच. कुंकल का उद्यमशीलता आधारित सिद्धान्त स्किनर एवं होम्मत के व्यवहारवादी मॉडल पर आधारित है। उनके विचार में व्यवहारवादी सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति की गतिविधियों की उत्पत्ति के कारक अनुबंधन प्रक्रियाओं में पाए जाते हैं। ये प्रेरक पुनर्बलन संबंधी व्यवस्था के व्यावहारिक परिवर्तनों से जुड़े हुए हैं। समाज और व्यक्ति के बीच पारम्परिक संबंध होता है। व्यक्ति को विशेष पुनर्बलन और नियंत्रणकारी उद्दीपन की आवश्यकता होती है। ये क्रिया प्रसूत अनुकूल प्रक्रिया (Operant Conditioning Procedure) के आवश्यक तत्त्व हैं।

ये सब कार्यविधियां व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होती हैं और व्यक्ति के व्यवहार की प्रतिरूप बनती हैं, जो व्यक्ति के अनुभव से विकसित होती हैं। व्यक्ति समाज के सदस्य के रूप में एवं समूहों से अनुभव प्राप्त करता है। जब व्यक्तित्व व्यवहारिक बन जाता है। कुंकल के अनुसार, ''यह संकल्पना उसी सीमा तक उपयोगी है जहाँ तक व्यवहार के संकेत मिलते हैं। वे व्यवहारवादियों को महत्त्व देते हैं और कहते हैं कि अपनी गतिविधियों में परिवर्तन लाने के लिए व्यक्तियों को अपने मूल्यों को बदलने की जरूरत नहीं है, बल्कि क्रिया प्रसूत अनुकूलन संदर्भ के कुछ विशिष्ट तत्वों को बदलना जरूरी है।'' उनके अनुसार, ''सामाजिक पूर्वापेक्षित कारक के निर्धारक तत्वों से वांछित प्रतिरूप बनाये जा सकते हैं।''

कुंकल का कहना है कि अल्पविकसित देशों में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिवर्तन लाने की आवश्यकता नहीं है। इसके स्थान पर असमान पुनर्बलन एवं दंड जैसे साधनों में सुधार लाने का प्रयास करना है। मानव आधारित व्यवहार मॉडल के अनुसार यदि व्यवहार में परिवर्तन लाना है तो पहले परिवर्तन पुनर्बलन, उद्दीपन, इनकी प्रस्तुति, सम्बद्ध अनुसूची एवं भेदमूलक उद्दीपन से करना चाहिए। सामाजिक परिवेश के कुछ तत्वों और पहलुओं में परिवर्तन करना जरूरी है, जिससे नया व्यवहार सीखने में सुविधा मिल सके।

कुंकल के अनुसार, ''व्यक्ति विशेष की आर्थिक विकास में जो भूमिका होती है, इससे संरचनात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है। वस्तुतः यह व्यवहारगत मॉडल महत्त्वपूर्ण अंग है। अतीत एवं वर्तमान दोनों प्रकार के सामाजिक संदर्भों के प्रभावों को ध्यान में रखते हुए व्यवहारगत मॉडल आर्थिक विकास के संदर्भ में व्यक्तिवादी, एवं संरचनात्मक दृष्टिकोण का समन्वय स्थापित करता है।''

कुंकल का यह भी कहना है कि क्रिया प्रसूत अनुकूलन सिद्धान्त पर आधारित आर्थिक विकास के व्यवहारगत दृष्टिकोण की क्षमता उस समय बढ़ती है, जब सरकार सामाजिक परिवेश के प्रासंगिक पहलुओं को आर्थिक नियोजित करती है। इससे मानव व्यवहारगत मॉडल भी व्यवहार को बदलने में अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार कुंकल का सिद्धान्त औद्योगीकरण की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि मानव व्यवहारगत मॉडल भी भूमिका अतीत एवं वर्तमान सामाजिक संरचना को ध्यान में रखता है। अन्य विचारों की तुलना में कुंकल का विश्वास है कि आर्थिक विकास के लिए उद्यम को बढ़ावा देने में तेजी लाई जा सकती है। उनके अनुसार व्यवहार संबंधित पूर्वापेक्षित बिन्दुओं की रचना के लिए छोटे पैमाने पर ही शुरुआत करनी चाहिए।

उद्यमशीलता की प्रकृति एवं विशेषताएं

व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं पर ध्यान न देकर व्यक्ति के उस कार्य को देखना होता है, जो उद्यमशीलता की संकल्पना से मेल खाता है। थॉमस डब्ल्यू जिम्मर्रर एवं नारमेन एम. स्कारबोरो ने अपनी पुस्तक में सफल उद्यमी की अनेक निम्नलिखित विशेषताएं बताई हैं।

(i) **वचनबद्धता एवं दृढ़ निश्चय**–किसी भी सफल उद्यमी में वचनबद्धता एवं सुदृढ़ निश्चय का होना आवश्यक है। जोखिमपूर्ण कार्यों में वचनबद्धता बहुत उपयोगी होती है। इसके बिना गलती होने के अधिक आसार होते हैं। सजगता द्वारा इससे बचा जा सकता है। दृढ़ निश्चय की अभिवृत्ति कार्य को पूरा करने में सहायक होती है।

(ii) **जिम्मेदारी उठाने की इच्छाशक्ति**–एक सफल उद्यमी में जिम्मेदारी उठाने की प्रबल इच्छाशक्ति होती है। इसके प्रयोग से व्यक्ति अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है और उद्यम से लाभ प्राप्त करता है। उत्तरदायी बनने की इच्छाशक्ति एक कुशल उद्यमी की पहचान होती है। वह अपने उद्यम से घनिष्ठता से जुड़ा होता है।

(iii) **अवसरों की खोज**–उद्यम को तेजी से आगे बढ़ाने हेतु उद्यमी हमेशा अवसरों की ताक में होता है। उसके विचार और अवसर घनिष्ठ रूप में जुड़े होते हैं। वह नये-नये अवसरों का विचार करता है, जिससे वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। संकटकाल में अपने लिए अवसर तलाश लेता है जिससे वह लाभ उठाता है।

(iv) **जोखिम को सहन करना, अस्पष्टता एवं अनिश्चितता**–यद्यपि उद्यमी अनावश्यक जोखिम से बचने का प्रयास करता है, परन्तु वह सुविचारित जोखिम उठाता है। उद्यमियों

www.neerajbooks.com